भगवान बुद्ध के महाश्रावक

महापंथक एवं चूलपंथक

(महापंथक संज्ञाविवर्त में तथा चूलपंथक चित्तविवर्त कुशलों में अग्र)

तथा स्थविर सुभूति

(शांतचित्त विहारियों में तथा दक्षिणीयों में अग्र)

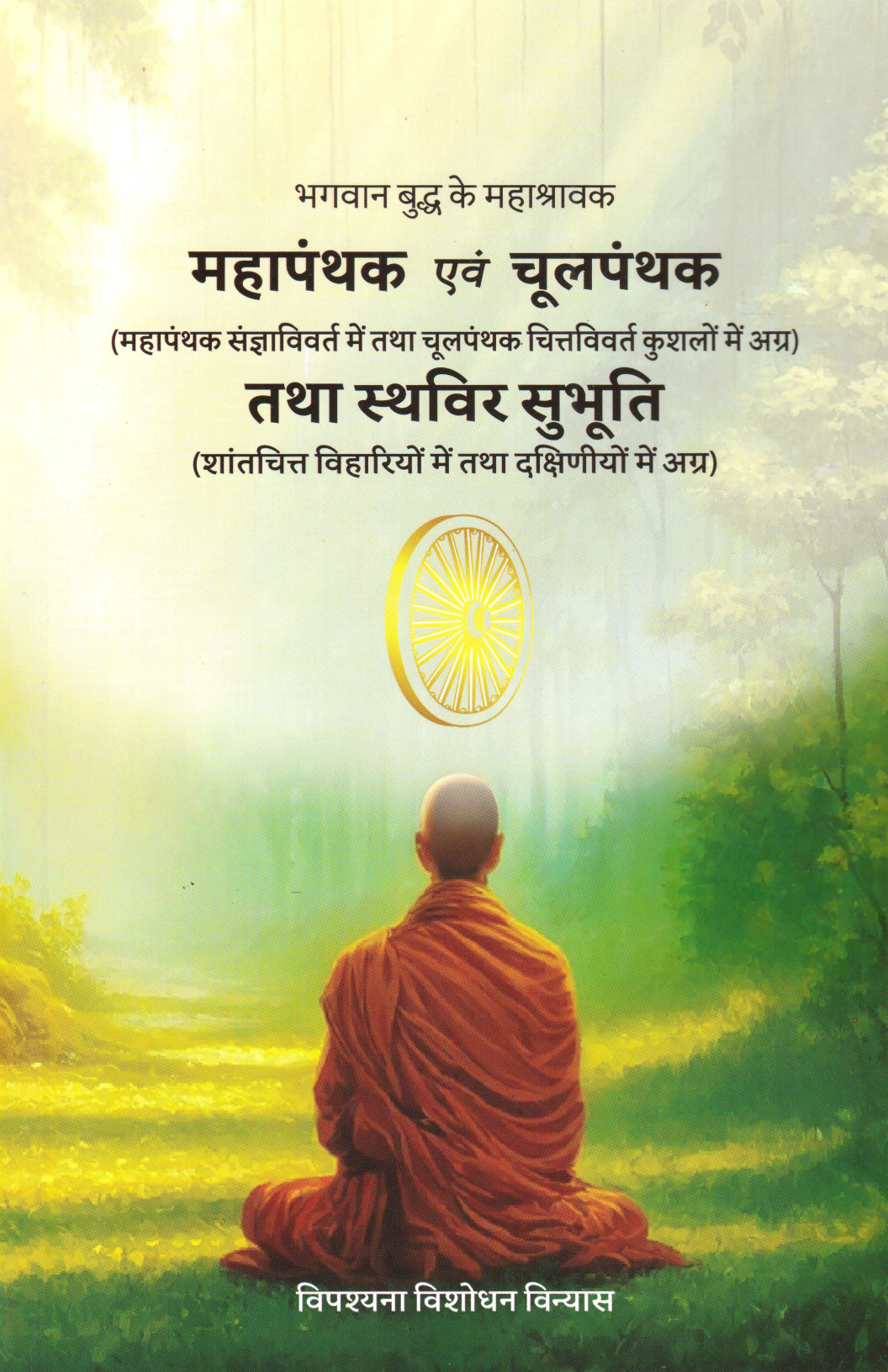

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

महापंथक एवं चूलपंथक

(महापंथक संज्ञाविवर्त में तथा चूलपंथक चित्तविवर्त कुशलों में अग्र)

तथा

स्थविर सुभूति

(शांतचित्त विहारियों में तथा दक्षिणीयों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H113 - महापंथक एवं चूलपंथक तथा स्थविर सुभूति

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : अप्रैल २०२४

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-476-8

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६,
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं सञ्ञाविवट्टकुसलानं यदिदं महापन्थको।"

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं चेतोविवट्टकुसलानं यदिदं चूळपन्थको।"

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं अरणविहारीनं दक्खिणेय्यानं यदिदं सुभूति।"

****

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में संज्ञाविवर्त कुशलों में अग्र हैं महापन्थक।"

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में चित्तविवर्त कुशलों में अग्र हैं चूलपन्थक।"

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में शांतचित्त विहारियों में तथा दक्षिणीयों में अग्र हैं सुभूति।"

– अङ्गुत्तरनिकाय (१. २. १९९-२०२)

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

भगवान बुद्ध के महाश्रावक
महापंथक एवं चूलपंथक
तथा
स्थविर सुभूति

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय 7

पंथक बंधुओं की जन्म-कथा 10

ननिहाल में पले-बढ़े 11

महापंथक की प्रव्रज्या 12

अनुज चूलपंथक को प्रव्रजित किया 13

भगवान की अनुकंपा 14

क्षीणास्रव क्रोधरहित 16

साधना में चूलपंथक की गंभीरता 17

धर्म-पथ पर पंथकों के वैशिष्ट्य 17

चूलपंथक मनोमय शरीर-रचना में अग्र 18

चूलपंथक द्वारा मनोमय शरीर रचना 19

अतीत जन्मों के संस्कार 21

पदुमुत्तर बुद्ध की भविष्यवाणी 21

मंदबुद्धि भिक्षु का उपहास 21

रजोहरण क्यों? 22

पूर्व जन्मों में भी चूलपंथक का उपकार किया 22

परिशिष्ट 25

पंथकों की अनुभव-गाथाएं 25

स्थविर महापंथक 25

स्थविर चूलपंथक 26

सुभूति 28

सुभूति की प्रव्रज्या 28

संसार में जन्म नहीं होता 29

हे मेघ! अब बरसो 29

सुभूति ने सुने श्रद्धावान के लक्षण 30

सुभूति अरण प्रतिपदा पर आरूढ़ हैं 32

सुभूति और उनके सदृश महास्थविर 35

अतीत कथा 36

हंसवती में नंद माणव 36

अग्र हेतु भविष्य कथन 37

परिशिष्ट 39

श्रावकों का वर्गीकरण 39

विपश्यना साधना केंद्र 40

प्रकाशकीय

भगवान ने पंथक बंधुओं (महापंथक और चूलपंथक) की गणना अस्सी महाश्रावकों में की है। उन्होंने महापंथक को संज्ञा विवर्त कुशल श्रावकों में अग्र तथा चूलपंथक को चित्त विवर्त श्रावकों में अग्र पदों पर प्रतिष्ठित किया।

दोनों सगे भाई पंथ (राह) में पैदा हुए इसलिए पंथक नाम पड़ा। महापंथक बड़ा और चूलपंथक छोटा था। इनकी मां राजगृह के एक समृद्ध श्रेष्ठिपरिवार की कन्या थी। युवावस्था में पैर डगमगाया, घरेलू नौकर के साथ घर से रात में निकल पड़ी। दोनों जनपद में रहने लगे। कुछ दिनों बाद वह गर्भवती हो गयी। प्रसूति के कष्ट और असुविधाओं को सोचकर वह मायके जा रही थी। महापंथक रास्ते में ही पैदा हो गया। कुछ वर्षों बाद चूलपंथक भी उसी तरह रास्ते में जनमा। मायके से लाया हुआ धन समाप्त होने पर वह पति के साथ मायके राजगृह गयी। पिता ने प्रचुर धन देकर उन्हें भगा दिया पर दोनों दौहित्रों को लेकर लालन-पालन करने लगा।

नाना के साथ दोनों भाई भगवान का धर्मोपदेश सुनने जाते। महापंथक को धर्मसंवेग जागा, वह नाना की अनुमति से प्रव्रजित हो गया। परिश्रम पूर्वक तपते हुए उन्होंने अर्हत्व की प्राप्ति की। उसने छोटे भाई चूलपंथक को भी प्रव्रजित किया। पर मंदबुद्धि होने के कारण वह चार माह में गाथा का एक अंश भी नहीं सीख पाया। महापंथक ने उसे विहार से निकाल दिया। भगवान ने चूलपंथक को रास्ते में देखा, बोले– भिक्षु! तुम रो रहे हो। उसने सब हाल बताया। भगवान ने उसे रोका और एक विशिष्ट आलंबन दे उसे काम करने को कहा। उसी समय राजवैद्य जीवक ने भगवान और पांच सौ प्रमुख भिक्षुओं को भोजन के लिये आमंत्रित किया। आयुष्मान महापंथक ने चार सौ निन्यानबे भिक्षुओं को उसमें सम्मिलित किया पर छोटे भाई को छोड़ दिया। इससे चूलपंथक उदास हो गया और उसे ठेस लगी। पर भगवान से प्रदत्त विशिष्ट आलंबन पर परिश्रम करते हुए वे अर्हत हो गये। मनोमय ऋद्धि ज्ञान में उन्होंने विशिष्टता प्राप्त की। इस ज्ञान में उनसे

बढ़कर केवल शास्ता ही थे।

जब वैद्य जीवक के यहां भोजन परोसने की व्यवस्था होने लगी तो शास्ता बोले– विहार में एक भिक्षु है उसे ले आओ। वह भिक्षु आयुष्मान चूलपंथक ही थे। जब दूत विहार में गया तब एक ही जैसे हजारो भिक्षुओं को देख घबड़ा गया। फिर बुद्ध द्वारा बतायी गयी रीति से उसने असली भिक्षु चूलपंथक को पहचाना। भोजन समाप्त हो जाने पर शास्ता आयुष्मान चूलपंथक को ही अनुमोदन करने को कहकर सभी भिक्षुओं के साथ विहार लौट आये। संघ में भिक्षुओं ने आयुष्मान चूलपंथक के प्रति आयुष्मान महापंथक के व्यवहार की आलोचना प्रारंभ कर दी। शास्ता ने समझाया– भिक्षुओ! मेरे पुत्र महापंथक ने चूलपंथक के हित में तथा धर्म के गौरव-वृद्धि में ऐसा किया। उसका चित्त राग, द्वेष आदि मलों से पूर्णतया मुक्त है।

****

दायकों को महाफल प्राप्त हो इसके लिये स्थविर सुभूति मेत्ता ध्यान के पश्चात ही भिक्षाटन के लिये निकलते, अतः प्रसन्न हो शास्ता ने उन्हें शांतचित्त विहारियों और दक्षिणीयों में अग्र स्थान पर प्रतिष्ठित किया। यह श्रेष्ठता स्थविर को शतसहस्त्र कल्पों पूर्व भगवान पदुमुत्तर बुद्ध के भविष्यकथन से प्राप्त हुई थी।

भगवान पदुमुत्तर के भविष्यकथन स्वरूप आयुष्मान सुभूति विभिन्न लोकों में पुण्य कर्म करते हुए श्रावस्ती में दानवीर अनाथपिंडिक के भाई सुमन के पुत्र होकर पैदा हुए। भगवान को जेतवनाराम समर्पित करने के दिन आयुष्मान सुभूति अनाथपिंडिक के साथ वहाँ गये। भगवान का धर्मोपदेश सुनकर श्रद्धा जागी और प्रव्रजित हो गये। लगनपूर्वक उद्योग करते हुए शीघ्र ही अरहंत अवस्था को प्राप्त हो गये। एक समय अनाथपिंडिक के पुत्र सद्ध के साथ वे भगवान के दर्शन के लिये गये। वहाँ उनकी प्रार्थना पर शास्ता ने विस्तार से श्रद्धावान के लक्षण बताये। भगवान के शब्दों में– कुलपुत्र सुभूति अरण प्रतिपदा पर आरुढ़ हैं।

एक समय वे भगवान के पास ही समाधि लगाये बैठे थे। उनकी दृढ़ता को अपने मन से जान कर शास्ता ने उनके प्रति उदान के ये वचन कहे– ऐसे

योगी का फिर संसार में जन्म नहीं होता। एक बार राजगीर में स्थविर के पहुँचने पर महाराज बिम्बिसार ने उनके लिये कुटिया बनाने का वादा किया, पर भूल गये। खुले में उनके द्वारा विहार किये जाने पर उनके प्रभाव से वर्षा रुक गयी। नगर में कोहराम मच गया। राजा को याद पड़ा, उसने तुरंत स्थविर के लिये कुटी तैयार करवायी। कुटी में उनके प्रवेश करते ही वर्षा प्रारंभ, जनता खुशहाल।